स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लालकिला दिल्ली से
प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी का भाषण

दिनांक: १५-८-६५
टेप-नं० १३५४७, १३५४८
स्थान: लालकिला दिल्ली ।

बहिनो और भाइयो,

आज १८ साल पूरे हुए, हमारी आजादी के, हमारी स्वतंत्रता के और पिछले तमाम वर्षों में हमारे नेता पंडित जवाहरलाल जी यहां आते थे और इस झण्डे को फहराते थे । पहला मौका जब यहां से यूनियन-जैक उतरा और यह राष्ट्रीय पताका फहराई गई तब भी उन्होंने ही इस काम को किया था । आज उनकी थाती, वह जिम्मेदारी, उन्होंने हमारे हाथों में सौंपी है और हमारा काम है कि उस जिम्मेदारी को हम ईमानदारी से और सच्चाई से निभायें ।

आजादी आने के बाद यह स्वाभाविक बात थी कि हम अपने देश की हालत पर सोचते और कोशिश करते कि अपने देश के रहने वाले बहिन और भाई तथा बच्चे उनकी हालत बने और सुधरे । हम गुलामी में पड़े हुए अपने देश को बना सकने में असमर्थ थे, और हमारे लिए एक कठिनाई और मुश्किल का जीवन बिताना था । आजादी के आने के बाद हमने मुल्क के आर्थिक ढांचे को, यहां की माली हालत को बदलने की कोशिश की, और उसमें लगे रहे हैं । जहां एक तरफ मुल्क बढ़ा है, उसने तरक्की की है वहां दूसरी तरफ हमारे लिए मुश्किलें भी आयी हैं, और लोगों को भी कठिनाइयां उठानी पड़ी हैं । हमने अपने देश की जो आज एक दूसरे देशों पर निर्भर करने की बात है, उसमें कुछ कमी लाने की कोशिश किया । जो कुछ यह पिछले दो-सौ सालों में अंग्रेजी जमाने में जो हम नहीं कर सके थे, उसको हमने पिछले १५ वर्षों में पूरा करने की कोशिश की है, चाहे हमारे वो बड़े बड़े कल और कारखाने हों

या हमारे लिए पैट्रोल और तेल जिसका यहां नाम-मात्र भी करीब करीब नहीं था, आज उसकी खानों को हम नये तरीके से बढ़ा रहे हैं और अपने पैट्रोल की शक्ति को पैदा कर रहे हैं। जहां बिजली और पावर कुछ थोड़े से शहरों की चीज़ थी, आज हम उसे कस्बों मे ले जा रहे हैं, बल्कि हमारी कोशिश है कि हम उसे गांव गांव तक पहुंचायें, और आज बहुत काफी गांव में अलग अलग सूबों में बिजली गई है और पहुंची है। और भी हमारी कोशिश इस बात की है कि अपने यहां हम स्टील बनायें, पैदा करें जो कि आज अब भी हमें काफी मात्रा में बाहर से मंगाना पड़ता है। बड़ी बड़ी मशीनें जो आज हम बाहर से मंगाते हैं, उनको भी हम कम करना चाहते हैं और आज हमारी कोशिश है कि चाहे वह सीमेंट का कारखाना हो, चाहे वह कपड़ों की मशीनें हों और चाहे वे स्टील-प्लान्ट हों या फर्टीलाइज़र के लिए मशीनें हों, उन्हें हम अपने देश में बनायें, ताकि हम दूसरे देशों पर बहुत समय तक के लिए निर्भर न करें और जहां तक हो अपनी शक्ति और ताकत को खुद बढ़ायें। जैसा मैंने आपसे कहा इसके लिए हमें अपने बड़े बड़े प्लैन, अपनी बड़ी बड़ी योजनायें बनानी पड़ी, और उन योजनाओं के जरिए हमने करोड़ों और अरबों रूपये अपने देश में लगाया। उसका थोड़ा असर यह भी था कि हमें कुछ अपने रूपयों को, अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए एक जिसे डेफिसेट फाइनेन्सींग कहते हैं, यानी नोटों को छाप कर अपनी जरूरत को पूरा करना, वह भी हमें करना पड़ा और आज भी उसके लिए हमारे सामने एक सवाल है कि हम अपना बड़ा प्लैन, अपनी चौथी पंचवर्षीय योजना जो हम बनाने जा रहे हैं, उसे हम किस तरह चलायें, कैसे उसके रूपये को उसकी जरूरत को पूरा करें, जिससे कि हम डेफीसेट फाइनेन्सींग में न पड़ें। हमें ज्यादा नोट छाप कर अपनी जरूरत को पूरा न करना पड़े। क्योंकि उससे दाम बढ़ते हैं, कीमतें बढ़ती हैं और लोगों की दिक्कतों को मैं अच्छी तरह जानता हूं कि आज लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। तो हमारा इरादा जरूर है

कि हम बड़ी योजना, बड़ा प्लान बनायें, क्योंकि आज जो भी प्लैन और योजना हम बनाते हैं वह हमारी जरूरत के ख्याल से कम है, छोटा है। एक तरफ हमारे सामने सवाल है कि हम धीरे धीरे बढ़ें, उसमें तीस साल चालीस साल, पचास साल, साठ साल लग जायें, दूसरी तरफ लोगों की मांगें हैं सूबों और प्रदेशों की जरूरतें हैं और वो चाहते हैं कि वे जल्दी से जल्दी पूरी हों। तो जब हमें जब सुनना पड़ता है कि हम एक छोटी सी एक बहुत छोटी योजना बनायें और दूसरी तरफ जब हम लोगों की जरूरतों को देखते हैं, तब फिर हमें यह महसूस होता है कि हम बहुत धीमे धीमे नहीं चल सकते, हमें तेजी से आगे जाना पड़ेगा और अगर उसके लिए कुछ तकलीफ और मुसीबतें भी उठानी पड़ीं और उठाना हो, तो उसे हमें उठाने के लिए तैयार रहना होगा। फिर भी जैसा आप जानते हैं कि हम एक तीस हजार पांच-सौ करोड़ रूपये का चौथा जो हमारा प्लान है, हमारी योजना है, वह हम उस बात को ध्यान में रख कर एक तीस हज़ार पांच सौ करोड़ की बात का ध्यान में रख कर, आज हम वैसी बड़ी योजना बनाना चाहते हैं, हमने बनाया भी है और उसकी आखिरी मंजूरी जल्दी होने वाली है। मगर यह जरूर हम चाहते हैं कि इस योजना के लिए हमें डेफिसेट फाइनेन्सींग न करनी पड़े। हमें नोटों को छाप कर अपनी जरूरत को पूरा न करना पड़े। इसलिए हमारा इरादा है कि उसको हम पूरी तरह से बचायेंगे और उसमें नहीं पड़ेंगे। लेकिन यह और भी ज्यादा जरूरी है कि अपने देश की कृषि की हालत को, खेती की पैदावार को, हम उसे बनायें और उसे बढ़ायें। मेरी राय में आज अगर हमारे लिए कोई सब से बड़ा और जरूरी काम है, तो आज अपनी खेती की पैदावार को बढ़ाना, अपने देश में ज्यादा गेहूं और चावल पैदा करना है। क्योंकि अगर हम बाहर के देशों से अपना अनाज मंगाते रहे और करोड़ों और अरबों रूपया हम बाहर भेजते रहे, तो उसका एक जबर्दस्त असर हमारी आर्थिक हालत पर पड़ेगा, हम एक कमजोरी की

हालत में बने रहेंगे, और अगर अनाज की कमी रहती है, तो उसके दाम भी बढ़ते हैं और जब अनाज का दाम बढ़ता है, और जैसा इस समय है, तो वह मुसीबत लोगों की, जनता की, वह बहुत बढ़ जाती है। इसलिए आज जैसा मैंने कहा कि यह बहुत ही जरूरी है कि हम अपने देश में अनाज ज्यादा से ज्यादा पैदा करें, और यह बात असम्भव नहीं है, यह ना-मुमकिन नहीं है (हमारे पास काफी शक्ति है, हमारे पास किसानों की इतनी बड़ी संख्या है, हमारे पास साधन हैं, उनका हमें इस्तेमाल करना और पूरे एक लगन से, एक मेहनत से इस बात के लिए जुट जाना कि हम अपनी खेती की पैदावार को बढ़ायेंगे, फिर कौन हमें रोक सकता है कि हम अपनी जरूरत को पूरी न कर सकें।) और इसलिए मैं चाहता हूं और यह जो हमारा अगला प्लान है, वह भी खेती और कृषि को एक प्राथमिकता देगा, उसके लिए पहली जगह बनायेगा और उसपर हम जो ज्यादा से ज्यादा खर्च कर सकते हैं, उसको करने की कोशिश करेंगे। मेरा यह निवेदन है कि इस काम में खेती की पैदावार के बढ़ाने के सिलसिले में, हमारी एक पूरी कोशिश हरेक की होनी चाहिए, चाहे वह किसान हो, चाहे वह हमारे सरकारी काम करने वाले हों, और चाहे हम लोग हों मिनिस्टरज़ हों, आज उनका एक बड़ा बोझा है, उनपर एक उनकी बड़ी जिम्मेदारी है, और उस काम को हमें पूरी शक्ति के साथ और बड़े लगन के साथ पूरा करना है। मैं यह भी चाहता हूं, वैसे तो हम चाहते हैं कि धीरे धीरे हम अनाज के बंटवारे के सिलसिले में, उसकी खरीदारी में प्रदेश की, सूबे की सरकार और केन्द्रीय सरकार, सैन्ट्रल गवर्नमेंट यह इस काम को अपने हाथ में ले। लेकिन आज की स्थिति में वह पूरा कर सकता सहल बात नहीं। मगर आज की स्थिति में और जो हालत इस समय खासतौर पर अपने देश में पैदा हो गई है, इसमें मैं जो व्यापारी वर्ग हैं, उनसे भी इस बात की दरख्वास्त करना चाहता हूं, इस बात की अपील करना चाहता हूं कि उन्हें अपनी जिम्मेदारी को समझना है

और अपनी जिम्मेदारी को निभाना है । मैं कोई वैसे न कहता, लेकिन आज जैसी जरूरत देश पर है और जिस खास हालत में हम आ गये हैं, उसमें एक एक जो काम करने वाला है, अनाज के बंटवारे का या खरीदारी का, उसपर एक बड़ा बोझ है, और अगर सरकार उसमें उनकी मदद कर सकती है, तो हम उसमें भी तैयार हैं । हम बातचीत करना चाहते हैं, हम रास्ता निकालना चाहते हैं, जिसमें सरकार अपने काम को करे और वह अपने काम को भी अच्छी तरह से, पूरी तरह से उसे अन्जाम दे । तो मैं यह आशा करता हूं कि जो हमारे अगले ये पांच वर्ष हैं, उसमें हम कोशिश करें कि हम अपने देश में इतना पैदा कर लें, कि जिससे हमें अपने दूसरे देशों पर निर्भर रहने की जो जरूरत है, उसमें बहुत बड़ी कमी आये, और फिर हमारे उसके साथ साथ उद्योग, कल-कारखाने और दूसरे हमारे सब काम तेजी और मज़बूती के साथ आगे बढ़ते रहें ।

आप जानते हैं कि मैं अभी कुछ पिछले महीने डेढ़ महीने में कई देशों में बाहर गया, और यह एक तरफ मैं सोवियत यूनियन और युगोस्लाविया गया, दूसरी तरफ मैं कैनेडा और यूनाइटिड किंग-डेम में गया और बीच में मैं यूनाइटिड अरब रिपब्लिक में भी गया । आप देखेंगे कि इन देशों में एक हमारा बड़े प्रेम के साथ स्वागत हुआ, लेकिन जो हमारी बातें हुईं, वे बातें हमारी बहुत लाभदायक और बहुत अच्छी हुईं । आप यह भी देखेंगे कि हमारा सम्बन्ध, हमारा मेल चाहे एक विचार-धारा के देश हों, चाहे दूसरी विचारधारा के देश हों, चाहे बीच में रहने वाले देश हों । हमारा एक परस्पर का मेल, हमारे ताल्लुकात, हमारे सम्बन्ध सभी से अच्छे हैं और यह हमारी नीति आज की नहीं, पहले की है । पंडित जी ने इस नीति को बनाया और हम समझते हैं कि भारत एक ऐसा मुल्क है, जिसपर कि एक दुनियां के देशों की नज़र है और हम चाहते हैं कि हम कोई बात न करें, जिससे कि एक दुनियां को गलत रास्ता हम दिखलायें ।

हम सारी दुनियां में मेल और मोहब्बत चाहते हैं, हम सारी दुनियां में सुलह और शान्ति चाहते हैं और इसलिए हमारा बराबर यह रुख रहा है कि जो कुछ भी हम उसके लिए कर सकें, पूरी तरह से करने की कोशिश करें।

हम अभी जानते हैं कि आज दुनियां में एक खतरा सा बना हुआ है, कुछ पता नहीं चलता है कि किस समय क्या हालत पैदा हो ? और एक आज बड़ा सवाल वीयतनाम का आ गया है। कोई नहीं जानता है कि किस वक्त वहां क्या हालत बने, और दुनियां किस भंवर में पड़ जाये। हमने कोशिश किया और हम चाहते हैं कि वीयतनाम का मामला शान्ति के साथ हल हो, लेकिन सभी देश आज चाहते हैं कि वहां शान्ति हो। मैं सोवियत यूनियन गया, वहां भी देखा कि वह पूरी तरह से शान्ति चाहते हैं और उनका मन, उनका ध्यान सुलह और शान्ति की ओर ही है, मगर हम चाहते हैं आज जब हम कोशिश करते हैं, तो चीन के रहने वाले भाई हमारी टीका-टिप्पणी करते हैं, ~~तो-चीन-के-र~~ हमें बुरा-भला कहते हैं। मैं अभी बेलग्रेड गया, तो उसकी कड़ी आलोचना चीन के पत्रों में हुई और चीन के नेताओं ने की। लेकिन जहां सब तमाम देश आज शान्ति और सुलह चाहते हैं, जैसा हमने कहा कि सोवियत यूनियन आज उसे पूरी तरह से शान्ति चाहता है, आज योरूप और अमेरिका और सारे देश यह ~~नर~~ कहते हैं कि वह सुलह-पसन्द करेंगे। लेकिन एक देश है, जो चाहता है कि न वीयतनाम में शान्ति रहे और न भारत में शान्ति रहे और वह चीन है। हमें इस बात का रंज है, हम बाहर के देशों की ओर तो देख रहे हैं, और दुनियां की बातों को भी देख रहे हैं, लेकिन हमें इस बात का रंज है कि आज हमारा देश भी एक खतरे के अन्दर है। आज चीन इस बात में दिलचस्पी लेता है कि भारत में झगड़ा बना रहे, संघर्ष रहे और हमारी तरक्की और उन्नति में बाधा पड़े। हमारा देश एक अपना आज़ाद पसन्द देश है, और आज उनको यह भाता नहीं कि हम अपने ढंग से अपने देश को

को चलायें और अपनी तरक्की हम अपने रास्ते से करें।
हम एक विचारधारा रखते हैं। हम कुछ सिद्धान्तों और उसूलों को मानते हैं, आज से नहीं पिछले ४०-४५ सालों में हमने उन सिद्धान्तों को, उन उसूलों को माना है, उसपर चले हैं, उसपर अमल किया है। मगर वह रास्ता चीन को पसन्द नहीं, और इसलिए जैसा मैंने कहा कि कहीं वह सलाह देते हैं, कहीं वे राय देते हैं, कहीं वे सिखाते हैं कि भारत को किसी न किसी तरह से धक्का लगे।

मुझे, आप जानते हैं कि अभी थोड़े दिन पहले कच्छ पर हमला हुआ और उस कच्छ के हमले को, हमने उसका मुकाबला किया, लेकिन यह बात हमारे मन में थी और हमने कहा भी उसे कि अगर कच्छ से पाकिस्तान अपनी फौजों को हटा ले, कच्छ को पूरी तरह से खाली कर दे, तब हम बातचीत करने के लिए तैयार होंगे, और वह बात जो हमने कही उसे हमने पूरा किया। पाकिस्तान आज कच्छ में कहीं नहीं, औरइसीलिए किया कि हम अपनी तरफ से जहां तक हो शान्ति को बिगड़ने न दें और दुनियां में एक बवन्डर पैदा न करें। हमने उसे माना, और उस बारे में कुछ बातें आगे बढ़ने वाली थी, कुछ बातें होने वाली थी, लेकिन इसी बीच में काश्मीर पर हमला पाकिस्तान ने किया। मैं इसे समझ-बूझ कर कहता हूं। यह कहना कि वहां से आज़ाद काश्मीर से लोग चले आ रहे हैं, यह बात बिल्कुल गलत है। यह सब पाकिस्तान की मदद से, सहायता से और उसकी पूरी जिम्मेदारी है कि आज काश्मीर में रेडर्स आ गये हैं, और उन्होंने इस बात की शायद ख्वाहिश की थी कि वहां एक वो काश्मीर में एक क्रान्ति सी पैदा कर देंगे, और वहां लोग उभर जायेंगे। मुझे इस बात का बड़ा ताज्जुब है कि जहां एक तरफ हमने शान्ति के रास्ते को पकड़ा और कुछ मेल और दोस्ती का हाथ बढ़ाया, वहां दूसरी तरफ हमें यह देखने को मिलता है कि काश्मीर पर हमला किया जा रहा है और मैं जानता हूं कि पाकिस्तान को उसको बढ़ाने का उसका पूरा इरादा है। हम इस हालत में क्या करें?

हमारा रास्ता साफ है। मैं यह पूरी तरह से समझता हूं कि अब हमारे लिए कोई बातचीत करने की गुंजाइश नहीं है, उसे हम सोच भी नहीं सकते हैं। (तालियां) काश्मीर में हम हजार हम चाहें हमारा दिल चाहता है और काश्मीर क्या भारत की तरफ से कि हम शान्ति को बनायें रखें, लेकिन जब इस तरह हमला हो, तो एक सरकार के नाते हमारा क्या जवाब हो सकता है सिवाए इसके कि हम हथियारों का जवाब हथियारों से दें। और मुझे कोई शक नहीं है कि आज काश्मीर के रहने वाले एक बहादुरी से, हिम्मत से इस मौके का सामना कर रहे हैं। आज काश्मीर के रहने वाले मुसलमान और हिन्दू और सिक्ख सब एक पूरी तरह से आज जो यह रैडर्स आ रहे हैं इनका उन्होंने मुकाबला किया, और एक उनके अन्दर आज यह एक पूरी भावना है कि यह रैडर्स इनको यहां से यह जो हमलावर हैं, इनको काश्मीर से पूरी तरह से हटा देना है, और मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि आज हमारे काश्मीर की सरकार, सादिक साहब जो वहां चीफ-मिनिस्टर हैं उस सूबे के लीडर हैं, उन्होंने और उनके साथियों ने बड़ी मजबूती से, बड़ी दिलेरी से और बड़ी बहादुरी से पिछले १०-१५ दिनों के अन्दर काम किया है। मैं इसके लिए काश्मीर सरकार को बधाई देना चाहता हूं। और काश्मीर के रहने वाले अपने तमाम भाइयों को, बहिनों को उनको भी बधाई व देना चाहता हूं कि जिस हिम्मत से उन्होंने काम किया है। मेरा विश्वास है कि आप सब की तरफ से मैं यह कह सकता हूं काश्मीर के रहने वालों से कि हमारा दिल उनके साथ है, हमारा तन-मन-धन उनके साथ है। हम पूरी तरह से आज हमारी फौजें वहां जुटी हैं, और हमारी पुलिस वहां मौजूद है, जो वहां आये हैं उनको हम एक एक को चुन कर हटा देना चाहते हैं, निकाल देना चाहते हैं और निकालेंगे, मुझे कोई शक नहीं, और इसलिए आज इस एक बड़ी जिम्मेदारी, क जो एक बड़ा संकट हमारे ऊपर आया है, उसके लिए हमको और आपको सब को तैयार रहना होगा। आज समय है,

कोई हमें आराम का वक्त नहीं, आज एक त्याग का, बलिदानी का, कुर्बानी का, जो भी रास्ता हो, वह हमें इख्तियार करने के लिए तैयार रहना होगा। यह आज थोड़े दिन की बात नहीं, कि यह चन्द दिन के लिए आये और ये चले जायेंगे, जैसा हमने कहा कि हम नहीं जानते कि यह खतरा कब तक बना रहेगा, क्योंकि आज अब उनके मन में यह बात आ गई कि वह काश्मीर को लें, हथियारों के जरिए लें। तो फिर उनको भी अपनी इज्जत की बात शायद मन में रहेगी, लेकिन वह इज्जत उनकी आज हमारे अपने देश की मर्यादा, हमारे देश की शान की भी कुछ मांग है और मैं आपकी तरफ से यह कहने वाला हूं और कहना चाहता हूं कि काश्मीर का एक टुकड़ा भी पाकिस्तान को मिलने वाला नहीं है। (तालियां)

लेकिन मैं आपका समय ज्यादा लेना नहीं चाहता, आपसे इतना ही निवेदन करूंगा कि आज देश में हमारे लिए एका की जरूरत है, मेल की जरूरत है और आज मैं नहीं चाहता, आज देश को सारे देश को आज यह अनुभव करना है, आज यह महसूस करना है कि आज देश की सुरक्षा का, उसकी हिफाजत का सवाल है, और उसमें हमारे ऊपर यह बोझा है कि हम अपने तमाम जो भी अन्तर हैं, मतभेद है, तफरके हैं उनको हम मिटायें। [आज इस बात की जरूरत नहीं है कि हम आन्दोलन चलायें, एजीटेशन करें। आज इस बात की जरूरत नहीं है कि हम हड़ताल करें और स्ट्राइक चलायें। यह समय ऐसा है] और अगले हमारे महीने ऐसे हैं, [जिसमें हरेक को कुछ अपनी मुसीबत और कठिनाई को बर्दाश्त कर देश के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर हमें आगे बढ़ना होगा और] आज जो हमारे ऊपर खतरा है उसको मिटाना होगा। [इसलिए मेरा यह निवेदन है आज देश के तमाम रहने वाले भाइयों से कि इस समय आपस में मेल और एका क्योंकि अगर देश के अन्दर गड़बड़ी हुई, तो हम अपने सरहदों की हिफाजत और रक्षा कैसे करें?] इसलिए अगर अपनी फौजों को मजबूत बनाना है और हमारी

आज फौजें और जैसा हमने कहा हमारे सिपाही जिस बहादुरी से, जिस हिम्मत से, जिस बलिदान से काम कर रहे हैं, त्याग से, जिसके लिए कि हम सब अनुगृहीत हूं उनके, हम उनका शुक्रिया अदा करते हैं, उनको धन्यवाद देते हैं। लेकिन अगर उनकी ताकत को मजबूत करना है, उनको बलवान बनाना है, तब फिर आज हम सब देश के अन्दर एक शान्ति रखें, मेल रखें, धर्म और मजहब के नाम पे न लड़ें, साम्प्रदायिकता की बात को न लायें और एक अपने जो छोटे-मोटे और दूसरे झगड़े हैं, उनमें भी इस समय न पड़े। तो मुझे विश्वास है, मुझे भरोसा है कि आज हमारे देश के रहने वाले भाई और बहिन, मेरी इस बात को गम्भीरता से सुनेंगे और अगले महीनों में इस तरह सब चलेंगे, जिसमें सारा देश शान्त रहे और हम मजबूती के साथ अपनी सरहदों की हिफाजत में लगे रहें और जो आज हमारे मुकाबले में आये हैं, उनको हम हटायें, उनको हम हटायें। (तालियां)

मैं आपसे यह कहूंगा कि जिस झण्डे के नीचे हम आप खड़े हैं और आज बैठे हैं, आज इस की हिफाजत और इसकी रक्षा का सवाल है, इसकी शान बनाये रखना है। यह कायम रहे, हम रहें या न रहें, लेकिन यह झण्डा रहना चाहिए और देश रहना चाहिए। और मुझे विश्वास है कि यह झण्डा रहेगा, हम और आप रहें न रहें, लेकिन यह भारतका सिर ऊंचा होगा, भारत दुनियां के देशों में एक बड़ा देश होगा और शायद भारत दुनियां को कुछ दे भी सके। बहुत धन्यवाद। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि तीन बार आप कृपा करके जयहिन्द का बोलें।

(जनता तीन बार जयहिन्द कहती है)